सुनीता अग्रवाल

भारत के प्रमुख नदी तंत्र और उनके विशिष्ट महत्व

भारत की प्रमुख नदियां देश की सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक समृद्धि और पारिस्थितिक विविधता का सार प्रस्तुत करती हैं। अपने विशेष महत्व के बावजूद ये नदियां बढ़ते प्रदूषण, अत्यधिक निष्कर्षण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के कारण दबाव में हैं। व्यापक प्रदूषण नियंत्रण उपायों, स्थायी जल प्रबंधन प्रयासों और समुदाय संचालित संरक्षण प्रयासों के माध्यम से इन खतरों को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है। नदियों का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है इनके बिना हमारा जीवन संभव नहीं है।

“नदियों को धरती का प्राण माना जाता है जो हमारी पृथ्वी और समस्त जीव-जंतुओं को जीवित रखती हैं। नदियां पृथ्वी की धमनियां हैं जिस प्रकार हमारे शरीर में रक्त हमको ऑक्सीजन और पोषक तत्व प्रदान करता है उसी प्रकार नदियां भी हमें जल संसाधन प्रदान करती हैं अतः वे हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।”

देश में उपलब्ध सतही जल संसाधनों में नदियों का स्थान सर्वोपरि है। देश में उपलब्ध सतही जल का अधिकांश भाग हमें नदियों से प्राप्त होता है। भारत की नदियों का देश के आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में प्राचीनकाल से ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नदियों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन मानव सभ्यताएं नदियों के किनारे ही बसती थीं। नगर, गांव सब नदियों के किनारे ही बसते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि लोगों को एहसास था कि नदी की उर्वरक क्षमता क्या है? इसीलिए वे वहां बसते थे। जिससे उपजाऊ जमीन पर खेती की जा सके। सिंधु घाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता नदियों के किनारे ही क्यों बसी थीं? इसके पीछे क्या कारण था? इसका कारण था-स्वच्छ जल, खाने-पीने के लिए भरपूर भोजन और निवास के लिए सुरक्षित स्थान, जिनकी आपूर्ति नदियों के किनारे आसानी से हो जाती थी। इसीलिए वहां पर प्राचीन सभ्यताएं विकसित हुईं। नदियों के तटों की मिट्टी उपजाऊ होती है। यहां घरेलू उपयोग, कृषि, पशुपालन आदि के लिए जल आसानी से मिल जाता है। इसके अतिरिक्त नदियों से आवागमन की सुविधाएं भी प्राप्त होती हैं। इन सभी कारणों से आदिमानव ने नदी की घाटियों में बसना शुरू किया। इन सभ्यताओं को नदी घाटी सभ्यता भी कहते हैं। नर्मदा नदी के तट पर नवधा टोली स्थान पर भी पाषाणिक ताम्र अवशेष मिले हैं। हड़प्पा सभ्यता की जीवनदायिनी सिंधु नदी में भारी मात्रा में जलोढ़ मिट्टी उपलब्ध थी। यहां के लोग गेहूं, जौ, सरसों, कपास, मटर, तिल आदि खाद्यान्नों का उत्पादन करते थे। इन लोगों ने चावल का भी उत्पादन किया जिसके लिए अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है। नदियाँ जल चक्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं अतः यह प्रकृति का एक महत्वपूर्ण उपहार हैं।

नदियों की उत्पत्ति

नदियाँ आमतौर पर ऊंचे इलाकों जैसे पहाड़ों या हिमनदों से छोटी-छोटी धाराओं के रूप में उद्गमित होती हैं। वर्षाजल और हिमगलन से गुरुत्वाकर्षण के कारण जल अपने अनुप्रवाह में प्रवाहित होने लगता है जिससे छोटी-छोटी धाराएं निर्मित होती हैं। ये धाराएं मिलकर छोटी-छोटी नदियों का रूप ले लेती हैं। नदियां या तो वर्षा पर निर्भर होती हैं या बर्फ़ पर। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रकृति द्वारा विकसित एक परिमार्जित मार्ग पर निरन्तर बहते जल की अविरल धारा ही नदी है। सामान्यतः हिमनद से गलित जल, पहाड़ तथा झरनों से निकलकर सागर अथवा झील में समा जाता है। धरती पर सबसे पहले सरस्वती नदी का अस्तित्व था। भारत की सबसे पहली और सबसे प्राचीन नदी सरस्वती को ही माना जाता है। वैदिक धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि सरस्वती ही पुष्कर में ब्रह्म सरोवर में प्रकट हुई। उत्तर प्रदेश के

इटावा जिले के बिसौली गांव में पांच नदियों का संगम होता है। यह दुनिया का एक मात्र ऐसा स्थान है जहां पांच नदियों का संगम होता है। इस संगम स्थल पर पांच नदियाँ यमुना, चंबल, सिंधु, पादुकोण और क्वांरी मिलती हैं। यह संगम स्थान जालौन और इटावा जिले की सीमा पर स्थित है। इस स्थान का महत्व सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक भी है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहां लाखों की तादाद में श्रद्धालु आते हैं। प्रयागराज में गंगा-यमुना सरस्वती की धारा का संगम होता है इसे त्रिवेणी भी कहते हैं।

नदियों के देश कहे जाने वाले भारत के नदी तंत्र को मुख्यतः चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(अ) हिमालय से उद्गमित होने वाली नदियाँ;

(आ) दक्षिणी प्रायद्वीपीय नदियाँ;

(इ) तटवर्ती नदियाँ; एवं

(ई) अंतर्देशीय नालों से द्रोणी क्षेत्र की नदियाँ।

(अ) हिमालय से उद्गमित होने वाली नदियाँः

एशिया की महान पर्वत श्रृंखला हिमालय विश्व की तीन प्रमुख नदी प्रणालियों सिन्धु एवं गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना नदी तंत्र का उद्गम स्थल है। इन नदियों में वर्षा, हिमगलन एवं हिमनदगलन द्वारा जल प्रवाह प्राप्त होता है जिसके कारण इन नदियों में पूरे वर्ष जल उपलब्ध रहता है। वर्षा-ऋतु के चार माह जून से सितम्बर के मध्य हिमालयी क्षेत्रों में होने वाली तीव्र वर्षा एवं अधिक मात्रा में हिमगलन के परिणामस्वरूप इन नदियों में इस अवधि के दौरान वार्षिक जलप्रवाह का 80% से अधिक भाग प्राप्त होता है। इस अवधि में इन नदियों में अधिक जल प्रवाह के कारण देश के अधिकाँश भागों में बाढ़ की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भारत में सिंधु और गंगा के विशाल और उपजाऊ मैदान सबसे महान और अभी भी जीवित प्राचीन सभ्यताओं में से एक, सिंधु घाटी सभ्यता के पालने रहे हैं। गंगा नदी, जो भारत के भौगोलिक क्षेत्र के लगभग एक तिहाई भाग को आच्छादित करती है, भारत की सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र नदी है। इस महान नदी की सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक गाथा पौराणिक है तथा भारतीय पौराणिक कथाओं और इतिहास में नदी के इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और घटनाओं की भरमार है। इस नदी के मार्ग में कई तीर्थस्थल स्थित हैं।

सिंधु नदी बेसिन

सिन्धु या सिंध नदी का भारत और हिन्दू इतिहास में सर्वाधिक महत्व है। इसे इंडस कहा जाता है इसी के नाम पर भारत का नाम इंडिया रखा गया। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में इस नदी का नाम सिन्धु नदी के नाम से वर्णित है। जिसका शाब्दिक अर्थ है सागर या जल का बड़ा समूह। ईरान में इस नदी को हिंदु के नाम से जाना जाता है। इस नदी के नाम पर ही हमारे देश का नाम हिंदु से हिन्दुस्तान पड़ा। यूनानी इस नदी को इंडोस के नाम से जानते हैं जो रोमन में परिवर्तित होकर इंडस हो गया है।

सिन्धु नदी विश्व की सबसे विशाल एवं लम्बी नदियों में से एक है। भारत में सिन्धु बेसिन का आवाह क्षेत्र उत्तरी अक्षांश $28^0 52'$ से $37^0 20'$ तथा पूर्वी देशांतर $72^0 35$ से $79^0 50'$ के मध्य जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा एवं केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के मध्य स्थित है। इस नदी का उद्गम समुद्र तल से 5,486 मीटर की ऊंचाई पर हिमालय के उत्तर में तिब्बत में कैलाश पर्वत श्रृंखला में स्थित मानसरोवर झील से हुआ है। इस नदी के किनारे ही वैदिक धर्म और संस्कृति का उद्गम और विस्तार हुआ है। इस नदी की कुल लम्बाई 3,199 किलोमीटर है। सिन्धु नदी का कुल आवाह क्षेत्र 11,65,500 वर्ग किलोमीटर है जो तिब्बत (चीन), भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में फैला हुआ है। इस बेसिन का भारत एवं पाकिस्तान में जल निकासी क्षेत्र क्रमशः 3,21,289 वर्ग किलोमीटर एवं 6,92,700 वर्ग किलोमीटर तथा तिब्बत (चीन) एवं अफगानिस्तान में कुल 15,100 वर्ग किलोमीटर है। सिन्धु बेसिन की दाएं तट की प्रमुख सहायक नदियाँ काबुल, स्वाट एवं कुर्रम तथा बाएँ तट की प्रमुख सहायक नदियाँ झेलम, रावी, ब्यास, चेनाब एवं सतलुज हैं। बाएँ तट की पांच सहायक नदियों के कारण इस क्षेत्र का नाम पंजाब पड़ा जिसका अर्थ है पांच नदियों की भूमि।

भारत एवं पाकिस्तान के मध्य सिन्धु नदी पर एक अंतर्राष्ट्रीय सिन्धु जल समझौता संधि (1960) स्थापित है जिसके आधार पर सिन्धु नदी एवं उसकी सहायक नदियों झेलम, एवं चेनाब के जल का उपयोग पकिस्तान द्वारा तथा रावी, ब्यास, एवं सतलुज नदियों के जल का उपयोग भारत द्वारा किया जाता है। वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के मध्य आतंकी गतिविधियों के परिणामस्वरूप भारत सरकार द्वारा इस समझौते को स्थगित कर दिया है।

सिन्धु नदी बेसिन के जल के उपयोग हेतु अनेकों बाँध, वीयर, नहरें, निर्मित किये गए हैं जिनमें भाखड़ा नांगल बाँध, पोंग बाँध, पंडोह बाँध, रणजीत सागर बाँध, बगलिहार जल विद्युत परियोजना, सलाल जल विद्युत परियोजना आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त इन नदियों पर अनेकों परियोजनाएं एवं नहरें निर्माणाधीन एवं प्रस्तावित हैं। इन परियोजनाओं द्वारा 3,420 MW विद्युत उत्पादन एवं 54 Mha कृषि क्षेत्र में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हैं।

गंगा-ब्रह्मपुत्र-बराक (मेघना) नदी तंत्र

गंगा-ब्रह्मपुत्र-बराक (मेघना) संयुक्त नदी तंत्र भारत वर्ष के लगभग एक तिहाई भू-भाग से आच्छादित है। यह क्षेत्र गंगा, ब्रह्मपुत्र एवं बराक से मिलकर बना है। गंगा और ब्रह्मपुत्र, हिमालय पर्वत श्रृंखला में हिमनद स्रोतों से निकलती हैं। बराक एक छोटी वर्षा-पोषित सहायक नदी है जो उत्तर-पूर्व भारत की नागा पहाड़ियों से निकलती है। गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियाँ आपस में बांग्लादेश में मिलती हैं जिसके पश्चात इसे पद्मा नदी के नाम से जाना जाता है आगे चलकर यह नदी मेघना नदी में समाहित होकर अंततः बंगाल की खाडी में समुद्र में समा जाती है। भारत, नेपाल एवं बांग्लादेश में गंगा, ब्रह्मपुत्र एवं मेघना बेसिन को संयुक्त रूप से ग्रेटर गंगा बेसिन के नाम से भी जाना जाता है।

गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों का औसत वार्षिक निस्सरण क्रमशः 16,650, 19,820 और 5,100 घन मीटर/सेकेंड है। फरक्का में गंगा का औसत वार्षिक प्रवाह लगभग $5.25 x 10^5$ मिलियन घन मीटर है। समय के साथ गंगा के प्रवाह में बड़े परिवर्तन होते रहते हैं। गर्म महीनों (मार्च से जून) के दौरान हिम और हिमनदगलन से गंगा और उसकी सहायक नदियों में अत्यधिक जल

एशिया की महान पर्वत श्रृंखला हिमालय विश्व की तीन प्रमुख नदी प्रणालियों सिन्धु एवं गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना नदी तंत्र का उद्गम स्थल है। इन नदियों में वर्षा, हिमगलन एवं हिमनदगलन द्वारा जल प्रवाह प्राप्त होता है जिसके कारण इन नदियों में पूरे वर्ष जल उपलब्ध रहता है। वर्षा-ऋतु के चार माह जून से सितम्बर के मध्य हिमालयी क्षेत्रों में होने वाली तीव्र वर्षा एवं अधिक मात्रा में हिमगलन के परिणामस्वरूप इन नदियों में इस अवधि के दौरान वार्षिक जलप्रवाह का 80% से अधिक भाग प्राप्त होता है। इस अवधि में इन नदियों में अधिक जल प्रवाह के कारण देश के अधिकाँश भागों में बाढ़ की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

प्रवाह प्राप्त होता है। इन नदियों में अधिकतम निस्सरण मानसून के महीनों (जून से सितंबर) के दौरान पाया जाता है।

एशिया में ग्रेटर गंगा बेसिन में जल संसाधनों की योजना और प्रबंधन वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह बेसिन पांच एशियाई देशोंः बांग्लादेश, भूटान, चीन, भारत और नेपाल द्वारा संयुक्त रूप से लगभग 17,45,000 वर्ग किमी क्षेत्र को जल निकासी प्रदान करता है। ग्रेटर गंगा बेसिन विश्व का 13वां सबसे बड़ा नदी बेसिन है जिसका अपवाह लगभग 1,400 बीसीएम/वर्ष है।

गंगा नदी

गंगा नदी भारतवर्ष की सर्वाधिक पवित्र नदियों में से एक है। हिन्दुओं में गंगा नदी देवी के समान पूज्यनीय है तथा इसे लोग गंगा माँ के नाम से पुकारते हैं। भारतवर्ष में गंगा शब्द को शुद्ध जल का पर्याय माना जाता है। गंगा नदी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेकों पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। जिनके आधार पर गंगा नदी को विष्णुपदी, त्रिपथगंगा, सुरसरी, देवनदी, मंदाकिनी, जाह्नवी, पाताल गंगा, भागीरथी इत्यादि विभिन्न नामों से जाना जाता है।

गंगा का धार्मिक महत्व हरिद्वार, प्रयाग और काशी में देखा जा सकता है। भारतीय हिंदू मान्यताओं के अनुसार गंगा पालनहार भगवान विष्णु के चरणों से उत्पन्न होती है और भगवान शिव की जटाओं में निवास करती है। गंगा की चर्चा ऋग्वेद, महाभारत, रामायण, पुराणों में पापनाशिनी, मोक्षदायिनी आदि नामों से मिलती है। पंचामृत में गंगाजल को एक अमृत के समान कहा गया है। गंगा भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है। इसकी प्रमुख सहायक नदियां यमुना, रामगंगा, कोसी, घाघरा, महानंदा आदि हैं।

भारत में उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले में गंगोत्री हिमनद के गोमुख नामक स्थान से अवतरित होने वाली गंगा अपनी यात्रा को भागीरथी के नाम से प्रारंभ करके पदमा के रूप में पूर्ण करती है। गंगा बेसिन उत्तरी अक्षांश 22°30’ से 31°30’ एवं पूर्वी देशांतर 73°30’ से 89°0’ के मध्य स्थित है। गंगा बेसिन उत्तर में हिमालय, पश्चिम में अरावली और सिंधु बेसिन, दक्षिण में विंध्य और छोटानागपुर पठार और पूर्व में ब्रह्मपुत्र रिज से घिरा हुआ है। यह बेसिन उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली में स्थित है। गंगा बेसिन का कुल आवाह क्षेत्र 10,86,000 वर्ग किमी है जो चार देशों भारत, नेपाल, तिब्बत (चीन) और बांग्लादेश में आच्छादित है। भारत में गंगा नदी बेसिन का कुल जल निकासी क्षेत्र 8,62,769 वर्ग किमी है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 26.2% है। ग्रेटर गंगा बेसिन का डेल्टा 56,700 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। गंगा बेसिन के भौगोलिक क्षेत्र का वृहत्त भाग भारत में स्थित है। गंगा नदी की कई महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ भारत और नेपाल में हिमालय से निकलती हैं। बांग्लादेश, बेसिन के डेल्टा क्षेत्र में स्थित है। गंगा नदी की कुल लंबाई 2,525 किमी है जो इसे एशिया की 20वीं सबसे लंबी नदी और विश्व की 41वीं सबसे लंबी नदी बनाती है।

भारत में गंगा और उसकी सहायक नदियों की सतही जल संसाधन क्षमता 525 बिलियन घन मीटर/वर्ष आंकी गई है, जिसमें से 250 बिलियन घन मीटर/वर्ष को उपयोगी माना जाता है। गंगा बेसिन में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1,486 घन मीटर/वर्ष आंकी गयी है। भारत में गंगा बेसिन की सतही जल भंडारण क्षमता 8.446×10^4 मिलियन घन मीटर तथा कुल पुनःपूर्ति योग्य भूजल संसाधन क्षमता 1.71×10^5 मिलियन घन मीटर आंकी गई है। यद्यपि इसकी पूर्ण भण्डारण क्षमता का उपयोग नहीं हो पा रहा है। गंगा नदी पर अनेक बहुउद्देशीय परियोजनाएं निर्मित तथा निर्माणाधीन हैं। निर्मित परियोजनाओं में टिहरी बाँध परियोजना, फरक्का बैराज, माताटीला परियोजना, राजघाट परियोजना आदि प्रमुख परियोजनाएं हैं।

गंगा बेसिन की जलविद्युत क्षमता 60% लोड फैक्टर पर 10,715 मेगावाट आंकी गई है। बेसिन में चिन्हित 142 योजनाओं में से 22 योजनाएं चालू हैं, जिनकी कुल स्थापित क्षमता 2,437 मेगावाट है और 12 योजनाएं निर्माणाधीन हैं, जिनकी स्थापित क्षमता लगभग 2,716 मेगावाट है।

यमुना नदी

यमुना नदी गंगा की प्रमुख सहायक नदी है। यह नदी भारत की पवित्रतम नदियों में से एक है। इस नदी को देवी का रूप माना जाता है। पुराणों में यमुना नदी के नाम पर एशिता, सूर्यतन्या, भानुजा, असीता, तरानिजा आदि वर्णित किये गए हैं।

यमुना नदी का उद्गम निचले हिमालय से उत्तरी अक्षांश 38°59’ एवं पूर्वी देशांतर 78°27’ पर मसूरी रेंज में बंदरपूंछ चोटियों के पास यमुनोत्री हिमनद से होता है, जो उत्तरकाशी (उत्तराखंड) जिले में समुद्र तल से लगभग 6,387 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। अपने उद्गम के पश्चात यमुना नदी 1,376 किलोमीटर की यात्रा पूर्ण करने के पश्चात उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (प्रयागराज) में गंगा में समाहित हो जाती है। यमुना नदी का कुल आवाह क्षेत्रफल 3,66,223 वर्ग किलोमीटर है। इसकी प्रमुख सहायक नदियां हिंडन, शारदा, चंबल, केन आदि हैं। यमुना नदी पर अनेक बांध और बैराज निर्मित हैं, जिनमें ताजेवाला बैराज, हथिनीकुंड बैराज, वजीराबाद बांध, ओखला बैराज, आईटीओ बैराज और डाकपत्थर बैराज प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त लखवार-व्यासी बांध परियोजना भी यमुना नदी पर निर्माणाधीन है।

कालिंदी पर्वत से उद्गमित होने तथा नदी के जल का रंग काला होने के कारण कादंबरी में इस नदी को कालिंदी नदी के नाम से भी वर्णित किया गया है। यमुना नदी, गंगा नदी की प्रमुख सहायक नदी है। पुराणों में इसे गंगा की छोटी भगिनी के रूप में वर्णित किया गया है। इसके अतिरिक्त इस नदी को जमुना के नाम से भी जाना जाता है।

यमुना नदी को सूर्य एवं छाया की पुत्री एवं मृत्यु के देव यम की छोटी भगिनी के रूप में वर्णित किया गया है। यह कहा गया है कि सूर्य की पत्नी छाया के श्यामल वर्ण के कारण यमुना एवं उनके अग्रज यमराज का रंग भी श्यामल है। यमुना नदी को यमराज से यह वरदान प्राप्त है कि भाई दूज के दिन जो व्यक्ति यमुना में स्नान करेगा उसके ऊपर से अकाल मृत्यु का संकट दूर हो जाएगा।

सरस्वती नदी

वर्तमान समय में लगभग विलुप्त हो चुकी सरस्वती नदी की चर्चा विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में की जाती है। प्राचीन काल में उत्तराखंड की शिवालिक पर्वत माला से अपनी यात्रा आरंभ कर सरस्वती नदी 1,600 किलोमीटर की यात्रा पूर्ण करके अरब सागर में समाहित होती है। यह कहा जाता है कि सरस्वती नदी प्राचीन काल में सर्वदा जल से भरी रहती थी और इसके किनारे अन्न की प्रचुर उत्पत्ति होती थी। यह नदी अपने उद्गम के पश्चात अंबाला तथा कुरुक्षेत्र नगरों से होती हुई कर्नाल और पटियाला जिलों में प्रविष्ट होकर सिरसा जिले की शद्रती (कांगार) नदी में मिल गई थी। वर्तमान काल में लोगों के विचार में अंतर सलिला बनकर त्रिवेणी संगम में इनका मिलन गंगा-यमुना के साथ होता है।

रामगंगा नदी

रामगंगा नदी गंगा नदी की प्रमुख सहायक नदी है। यह नदी भारत की प्रमुख तथा पवित्र नदियों में से एक है। उत्तराखण्ड की हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं के कुमाऊँ मण्डल के अन्तर्गत अल्मोड़ा जिले के दूनागिरी (पौराणिक नाम द्रोणगिरी) से इस नदी का उद्गम होता है। उद्गम से लेकर गंगा के संगम तक रामगंगा नदी की लंबाई 596 किमी है। अपने मार्ग में रामगंगा नदी पर्वतीय क्षेत्रों से होकर प्रवाहित होती है और उसके मार्ग में कई झरने और तेज धाराएं पायी जाती हैं। रामगंगा नदी अपने उद्गम के पश्चात पर्वतीय तथा मैदानी क्षेत्रों की यात्रा करने के पश्चात कन्नौज के निकट

ब्रह्मपुत्र एक महानद

गंगा नदी की सहायक नदी के रूप में गंगा नदी में समाहित हो जाती है। रामगंगा नदी पर कालागढ़ नामक स्थान पर प्रसिद्ध रामगंगा बाँध का निर्माण किया गया है जिससे विद्युत उत्पादन तथा तराई के मैदानों में सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। नदी पूर्णतः उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश राज्यों में बहती है। बेसिन का जलग्रहण क्षेत्र लगभग 32,493 वर्ग किमी है। रामगंगा नदी में समाहित होने वाली महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ खो, गांगन, अरिल, कोसी और देवहा (गोरी) हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी

ब्रह्मपुत्र नदी पूर्वोत्तर भारत की प्रमुख नदियों में से एक है। ब्रह्मपुत्र, हिमालय के कैलाश पर्वत के निकट मानसरोवर झील से उद्गमित एक दुर्गम एवं तेज बहाव का महानद है। भारत की अधिकाँश नदियों के नाम स्त्रीलिंग हैं जबकि ब्रह्मपुत्र का नाम पुल्लिंग है। पौराणिक कथाओं के अनुसार ब्रह्मपुत्र नदी को भगवान् ब्रह्मा के पुत्र के रूप में जाना जाता है अतः इसका नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा है। तिब्बतियों के अनुसार, इस नदी का स्रोत हिमालय की कैलाश पर्वत श्रृंखला के पास कांगलुंग कांग हिमनद है, जो तिब्बती पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में उत्तरी अक्षांश $30^{\circ}30'$ एवं पूर्वी देशांतर $82^{\circ}10'$ पर समुद्र तल से 5,300 मीटर की ऊँचाई पर कोंगग्यू त्सो झील के पास स्थित है। यहाँ नदी को तमचोक खंबब कांगड़ी कहा जाता है। कई बर्फीली धाराएं मानसरोवर झील से लगभग 60 किमी दक्षिण-पूर्व में दर्रे से नदी में मिलती हैं। ब्रह्मपुत्र नदी बंगाल की खाड़ी में समाहित होने से पूर्व तीन देशों, अर्थात चीन, भारत और बांग्लादेश से होकर 2,880 किमी की दूरी तय करती है। ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत में सांगपो के नाम से जानी जाती है तथा भारत में अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने के बाद यह दिहांग कहलाती है। असम में इसे ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है तथा बांग्लादेश में इसे जमुना कहा जाता है। गंगा एवं ब्रह्मपुत्र के संगम के बाद दोनों की सम्मिलित धारा को मेघना कहा जाता है। इसका जलग्रहण क्षेत्र 5,80,000 वर्ग किमी, औसत वार्षिक निस्सरण 19,820 घन मीटर/सेकेंड, औसत वार्षिक अवसाद भार 735 मिलियन मीट्रिक टन और विशिष्ट बाढ़ निस्सरण 0.149 घन मीटर/ सेकेंड/वर्ग किमी है। इस नदी पर असम राज्य में विश्व का सबसे बड़ा माजुली नामक नदी द्वीप स्थित है।

चिनाब नदी पर निर्मित बगलिहार परियोजना

ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में जल संसाधनों का बहुत कम उपयोग किया जाता है। इन संसाधनों की अस्थायी और स्थानिक पैमाने पर उपलब्धता के कारण इस क्षेत्र में रहने वाली आबादी को जीवन शैली में सुधार का अवसर मिलता है। इस क्षेत्र की बुनियादी मांगें पेयजल, सिंचाई, जलविद्युत और नौवहन आदि हैं। देश के इस भाग के जल संसाधन थोड़े-बहुत जैविक प्रदूषण को छोड़कर प्रदूषण से लगभग मुक्त हैं।

पूर्वोत्तर राज्यों में ब्रह्मपुत्र और बराक बेसिन की जलविद्युत क्षमता 60% लोड फैक्टर पर 34,920 मेगावाट आंकी गई है। यह भारत की सभी नदियों की जल विद्युत क्षमता का 41.5% है। नदी और उसकी सहायक नदियों में जलविद्युत विकास की अपार संभावनाएं हैं। अनुमान है कि अकेले अरुणाचल प्रदेश में 60% लोड फैक्टर पर 26,756 मेगावाट की जलविद्युत क्षमता उपलब्ध है परन्तु अब तक केवल 125 मेगावाट (0.47%) जल विद्युत क्षमता का ही विकास किया जा सका है। कुल मिलाकर इस क्षेत्र में बड़ी जलविद्युत क्षमता की उपलब्धता के बावजूद, वर्तमान विकास बहुत कम है। उपलब्ध क्षमता में से अब तक केवल 2% से भी कम का ही विकास किया जा सका है।

(आ) दक्षिण प्रायद्वीप की नदियाँ

दक्षिण प्रायद्वीप की नदियों को दो समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः

(i) पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली नदियाँ और

(ii) पूर्व की ओर प्रवाहित होने वाली नदियाँ।

पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली महत्वपूर्ण नदियाँ

नर्मदा और तापी नदियाँ पश्चिम की ओर अरब सागर में प्रवाहित होती हैं।

नर्मदा नदी

नर्मदा नदी मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में मैकाल पर्वतमाला के अमरकंटक पठार से उत्तरी अक्षांश $22^{\circ}40'$ एवं पूर्वी देशांतर $81^{\circ}45'$ पर समुद्र तल से 1,057 मीटर की ऊँचाई से उद्गमित होती है। गुजरात में भरूच के पास अरब सागर में खंभात की खाड़ी में समाहित होने से पूर्व नदी 1,312 किमी की दूरी तय करती है।

नर्मदा बेसिन का आवाह क्षेत्र 98,796 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है और यह $72^{\circ}32'$ पूर्व से $81^{\circ}45'$ पूर्वी देशान्तर तथा $21^{\circ}20'$ उत्तर से $23^{\circ}45'$ उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। सरदार सरोवर बांध तक बेसिन का जलग्रहण क्षेत्र 88,000 वर्ग किलोमीटर है। बेसिन उत्तर में विंध्य, पूर्व में मैकाल पर्वतमाला, दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत माला, और पश्चिम में अरब सागर से घिरा हुआ है। बेसिन का अधिकांश भाग समुद्र तल से 500 मीटर से कम की

सनातन धर्म में नदियों को माता के समान सम्माननीय और पूज्यनीय माना जाता है। गंगा, यमुना, सरस्वती की सदा पूजा की जाती है। प्रयागराज में तीनों नदियों का संगम देखा जा सकता है जो बहुत ही विहंगम है। भारत की प्रमुख नदियां गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी यह सप्त नदियां हैं। इनका धार्मिक महत्व बहुत अधिक है नदियों को जन्म देने वाले बड़े-बड़े आठ पहाड़ हैं जिन्हें हम कूल पर्वत कहते हैं। अष्टकूल पर्वत को मान्य किए बिना सब अधूरा है। तो भी सप्त द्वीप, सप्त सरिता, सप्तसागर उनको सप्तणृव भी कहते हैं और इसके साथ पहाड़ों को भी सप्त पर्वत बनना ही पड़ा।

ऊँचाई पर स्थित है। पंचमढ़ी के आसपास का एक छोटा सा क्षेत्र समुद्र तल से 1,000 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर स्थित है। नर्मदा नदी पर इंदिरा सागर परियोजना, ओंकारेश्वर परियोजना एवं सरदार सरोवर परियोजना निर्मित हैं। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ तवा, शेर, शक्कर, दूधी, बर्ना आदि हैं।

पुण्यसलिला मेकलसुता मां नर्मदा के पुण्य प्रताप से हर कोई परिचित है। वैसे तो सामान्यतः अनेक नदियों से कोई न कोई कथा जुड़ी हुई है, लेकिन मां नर्मदा इनमें सबसे भिन्न हैं। नर्मदा नदी सामान्यतः नर्मदा के नाम से प्रचलित है। इस नदी को रेवा नदी भी कहा जाता है। पुराणों में इस नदी के अनेक नाम मिलते है जिनमें दक्षिण गंगा, इन्द्रिजा, सोम्भावा, मेकल्द्रिजा, पूर्व गंगा,आदि प्रमुख हैं। नर्मदा नदी को लेकर अनेक मान्यताएं हैं लेकिन ऐसा बताया जाता है कि जो भी भक्त पूर्ण निष्ठा के साथ इनकी पूजा व दर्शन करते हैं उन्हें ये जीवनकाल में एक बार दर्शन अवश्य देती हैं। जिस प्रकार गंगा में स्नान का पुण्य है उसी प्रकार नर्मदा के दर्शन मात्र से मनुष्य के कष्टों का अंत हो जाता है।

ताप्ती नदी

ताप्ती नदी जिसे तापी नदी भी कहते हैं भारत के मध्य भाग में प्रवाहित होने वाली एक प्रायद्वीपीय नदी है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में प्रवाहित होती है। भारतीय प्रायदीप में केवल नर्मदा एवं ताप्ती ही दो प्रमुख नदियां हैं जो पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं। यह नदी पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 740 किलोमीटर की दूरी तय करती है। और अन्ततः खम्भात की खाड़ी में गिरती है। इसे सूर्य पुत्री भी कहते हैं।

पूर्व की ओर प्रवाहित होने वाली महत्वपूर्ण नदियाँ

पूर्व की ओर प्रवाहित होने वाली महत्वपूर्ण दक्षिण प्रायद्वीपीय नदियाँ महानदी, गोदावरी, कृष्णा, और कावेरी हैं। ये नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।

गोदावरी नदी

गोदावरी बेसिन उत्तरी अक्षांश $16^{\circ}16'$ से $23^{\circ}43'$ तथा पूर्वी देशांतर $73^{\circ}26'$ से $83^{\circ}07'$ के मध्य स्थित है। बेसिन का आवाह क्षेत्र 3,12,813 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 10% है। यह उत्तर में सतमाला पहाड़ियों, अजंता रेंज और महादेव पहाड़ियों से, पूर्व और दक्षिण में पूर्वी घाटों से और पश्चिम में पश्चिमी घाटों से आच्छादित है।

दक्षिण-गंगा गोदावरी नदी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी और भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी है। गोदावरी को श्रद्धापूर्वक "वृद्ध गंगा" या "दक्षिण गंगा" के रूप में जाना जाता है। गोदावरी नदी महाराष्ट्र के नासिक जिले में समुद्र तल से 1,067 मीटर की ऊँचाई पर अरब सागर के तट से लगभग 80 किमी दूर त्र्यंबकेश्वर के पास सह्याद्रि से उद्गमित होती है। महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश से होकर लगभग 1,465 किमी दक्षिण-पूर्व दिशा में बहने के बाद, गोदावरी राजमुंदरी के उत्तर में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसे गौतमी एवं वृद्ध गंगा के नाम से भी जाना जाता है। गौतमी के नाम से त्र्यंबकेश्वर में गोदावरी नदी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गोदावरी की सात धाराएं वसिष्ठा, कौशिकी, वृद्ध गौतमी, भारद्वाजी, आत्रेयी और तुल्या अतीव प्रसिद्ध हैं। पुराणों में भी इन नदियों का वर्णन मिलता है। इन्हें महापुण्यप्राप्ति कारक बताया गया है।

गोदावरी की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ प्रवर, पूर्णा, मंजरा, मनेर, पेनगंगा, वर्धा, प्राणहिता, इंद्रावती और सबरी हैं। जयकवाड़ी परियोजना, श्रीराम सागर परियोजना और कॉटन बैराज (दौलेश्वरम) परियोजना, इंचमपल्ली परियोजना और पोलावरम परियोजना बेसिन में मौजूद महत्वपूर्ण परियोजनाएं हैं।

महानदी

महानदी अपने नाम के अनुरूप ही छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा अंचल की सबसे बड़ी नदी है। प्राचीनकाल में महानदी का नाम चित्रोत्पला था। महानन्दा एवं नीलोत्पला भी महानदी के ही उपनाम हैं। छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा में पवित्र पावनी गंगा कही जाने वाली इस नदी का उद्गम महर्षि श्रंगी के आश्रम के निकट से होता है। यह कहा जाता है कि महानदी के पवित्र जल में स्नान से लाखों लोगों की इच्छाओं की पूर्ति होती है। महानदी बेसिन 80° 30' से 86° 50' पूर्वी देशांतर और 19° 21' से 23° 35' उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। यह बेसिन उत्तर में मध्य भारत की पहाड़ियों से, दक्षिण और पूर्व में पूर्वी घाट से और पश्चिम में मैकाल पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा है। महानदी बेसिन का आवाह क्षेत्र 1,41,589 वर्ग किमी है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 4.3% है। यह बेसिन मुख्यतः उड़ीसा, बिहार, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों में स्थित है। बेसिन आकार में गोलाकार है जिसका व्यास लगभग 400 किमी और जल निकासी मार्ग लगभग 160 किमी लंबा और 60 किमी चौड़ा है।

महानदी का उद्गम छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के नगरी कस्बे के पास फरसिया गांव से 6 किमी दूर समुद्र तल से 442 मीटर की ऊंचाई पर एक कुंड से होता है। महानदी की कुल लंबाई लगभग 851 किलोमीटर है, जिसमें से 357 किलोमीटर छत्तीसगढ़ में और शेष 494 किलोमीटर उड़ीसा में है। यह नदी बलौदा बाज़ार के अनुप्रवाह में उड़ीसा राज्य में प्रवेश करती है और कटक के पास उड़ीसा के मैदानों में प्रवेश करने के लिए पूर्वी घाटों को पार करती है। यह अंततः कई शाखाओं के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। प्रसिद्ध तीर्थनगरी पुरी इन शाखाओं में से एक के मुहाने पर स्थित है। महानदी की प्रमुख सहायक नदियाँ पैरी, सोंढुर, शिवनाथ, हसदेव, अरपा, जोंक, तेल आदि हैं। महानदी नदी पर कई बांध निर्मित किये गए हैं, जिनमें हीराकुंड बांध, गंगरेल बांध (रविशंकर सागर), दुधावा जलाशय और सोंदूर जलाशय प्रमुख हैं। महानदी बेसिन में स्थित अतिरिक्त बांधों में हसदेव बांगो, तांदुला और कई छोटी परियोजनाएं सम्मिलित हैं।

कृष्णा नदी

कृष्णा नदी दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत में पूर्व की ओर प्रवाहित होने वाली दूसरी सबसे बड़ी अंतर्राज्यीय नदी है। कृष्णा नदी महाराष्ट्र राज्य में समुद्र तल से लगभग 1,337 मीटर की ऊंचाई से महाबलेश्वर के पास पश्चिमी घाट की महादेव श्रेणी से उद्गमिता होती है। यह नदी महाराष्ट्र में 305 किमी, कर्नाटक में 483 किमी और आंध्र प्रदेश में 612 किमी की दूरी तक प्रवाहित होती है और अंत में बंगाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है। इस प्रकार नदी की लंबाई लगभग 1,400 किमी है। कृष्णा बेसिन $13^{\circ}07'$ से 19° 20' उत्तरी अक्षांश और $73^{\circ}22'$ और 81° 10' पूर्वी देशांतर के

गोदावरी नदी-दक्षिण की गंगा

मध्य स्थित है। उत्तर में, यह बेसिन गोदावरी बेसिन से, दक्षिण और पूर्व में पूर्वी घाट से और पश्चिम में पश्चिमी घाट से घिरा है। यह बेसिन 2,58,948 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 8% है। कृष्णा नदी पर नागार्जुन सागर परियोजना तथा श्री शैलम परियोजनाएं निर्मित हैं। कृष्णा नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ कोयना, येरला, वर्णा, पंचगंगा, दूधगंगा, घाटप्रभा, मालप्रभा, भीमा, तुंगप्रभा, मूसी आदि हैं।

पुराणों में इस नदी को क्रिश्नावेना एवं योगिनितंत्र में कृष्णावेणी के रूप में वर्णित किया गया है। इस नदी को सम्राट अशोक के शासनकाल में खरावेला द्वारा रचित हथिगुम्फा लिपिक में कन्हापेना के नाम से एवं जातक में कान्हापेंना के नाम से भी वर्णित किया गया है। यह कहा जाता है कि पेशवाओं के शासनकाल में इस नदी के तट पर अनेकों स्मारकों का निर्माण कराया गया।

कावेरी नदी

कावेरी बेसिन 10°05’ से 13°30’ उत्तरी अक्षांश तथा 75°30’ से 79°45’ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह पश्चिम में पश्चिमी घाट, पूर्व और दक्षिण में पूर्वी घाट और उत्तर में तुंगभद्रा (कृष्णा) और पेन्नार बेसिनों से आच्छादित है। कावेरी बेसिन 81,155 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 24.7% है। कावेरी बेसिन तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और पांडिचेरी राज्यों में स्थित है। बेसिन का आकार कुछ हद तक आयताकार है जिसकी अधिकतम लंबाई और चौड़ाई क्रमशः 360 किमी

गंगा नदी का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व

और 200 किमी है।

कावेरी नदी, जिसे दक्षिण गंगा या दक्षिण की गंगा के रूप में भी जाना जाता है, दक्षिण भारत की प्रमुख पवित्र अंतर्राज्यीय प्रायद्वीपीय नदियों में से एक है। यह गोदावरी, महानदी और कृष्णा के बाद भारतीय प्रायद्वीप की चौथी सबसे बड़ी नदी है जो कर्नाटक राज्य के कुर्ग जिले के ब्रह्मगिरि पहाड़ियों से 12°75’ उत्तरी अक्षांश तथा 74°34’ पूर्वी देशांतर पर समुद्र तल से 1,341 मीटर की ऊंचाई पर पश्चिमी घाट में ब्रह्मगिरी पर्वत के तालकावेरी से उद्गमित होती है और अपनी 765 किलोमीटर की यात्रा के पश्चात बंगाल की खाड़ी में समाहित होने से पहले कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पांडिचेरी राज्यों से गुज़रते हुए पूर्व दिशा में बहती है। नदी की प्रमुख सहायक नदियां काबिनी, सुवर्णवती, शिमशा, अर्कावती, चिन्नार, पलार, भवानी, नोयिल, तिरुमणिमुत्तर, अमरावती आदि हैं। कृष्णराजसागर, मेट्टूर और ग्रैंड एनीकट बेसिन में निर्मित प्रमुख जल संसाधन परियोजनाएं हैं।

(इ) तटवर्ती नदियाँ

तटीय क्षेत्र में कई नदियां हैं जो तुलनात्मक रूप से छोटी हैं। पूर्वी तट के डेल्टा के पास ऐसी कुछ ही नदियाँ समुद्र में मिलती हैं, जबकि पश्चिमी तट पर ऐसी 600 नदियां हैं। पश्चिमी तट की नदियाँ इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनमें देश के 14% जल संसाधन समाहित हैं जबकि भूमि का केवल 3% जल ही उनमें समाहित है।

(ई) अंतर्देशीय नालों से द्रोणी क्षेत्र की नदियाँ

पश्चिमी राजस्थान राज्य में केन्द्रित अंतर्देशीय प्रणाली की नदियाँ कम हैं और कम वर्षा वाले वर्षों में अक्सर लुप्त हो जाती हैं। राजस्थान की कुछ नदियाँ समुद्र में नहीं मिलती हैं। वे खारे झीलों में बह जाती हैं या रेत में खो जाती हैं और समुद्र में उनका समागम नहीं होता है।

नदियों के महत्व

नदियों का आर्थिक महत्व

नदियों का धरती के लिए वही महत्त्व है जो महत्व शरीर के लिए रक्त शिराओं का है। नदियों पर ही हमारी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। नदियां कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा सिंचाई के लिए एक विश्वसनीय जल स्रोत के रूप में कार्य करती हैं। नदी के किनारे पर पाई जाने वाली उपजाऊ मिट्टी फसलों की खेती के लिए आदर्श है और जल की प्रचुरता, कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद करती है। किसान सदियों से नदियों की शक्ति का उपयोग करते आ रहे हैं। एशिया में चावल की खेती, अंगूर की खेती के लिए नदियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। नदियां लंबे समय से महत्वपूर्ण जल परिवहन मार्गों के रूप में कार्य करती हैं। इतिहास में प्राचीन सभ्यताएं माल के परिवहन के लिए नदियों पर निर्भर रहती थीं। प्रमुख नदियों के किनारे स्थित कई शहरों और बंदरगाहों की रणनीतिक स्थिति ने आर्थिक समृद्धि और व्यापार के नेटवर्क के विकास को बढ़ावा दिया है। नदियां जल-विद्युत उत्पादन के माध्यम से अक्षय ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। जल विद्युत उत्पादन के लिए नदियाँ बहुत आवश्यक हैं। विद्युत परियोजनाएं रोजगार के अवसर पैदा करती हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती हैं। इसके अतिरिक्त बिजली से प्राप्त राजस्व को स्थानीय बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश किया जा सकता है जिससे आर्थिक विकास में अधिक योगदान प्राप्त होता है।

नदियों का धार्मिक महत्व

सनातन धर्म में नदियों को माता

के समान सम्माननीय और पूज्यनीय माना जाता है। गंगा, यमुना, सरस्वती की सदा पूजा की जाती है। प्रयागराज में तीनों नदियों का संगम देखा जा सकता है जो बहुत ही विहंगम है। भारत की प्रमुख नदियां गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी यह सप्त नदियां हैं। इनका धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। नदियों को जन्म देने वाले बड़े-बड़े आठ पहाड़ हैं जिन्हें हम कूल पर्वत कहते हैं। अष्टकूल पर्वत को मान्य किए बिना सब अधूरा है। तो भी सप्त द्वीप, सप्त सरिता, सप्तसागर उनको सप्तणृव भी कहते हैं और इसके साथ पहाड़ों को भी सप्त पर्वत बनना ही पड़ा। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के प्रति धार्मिक निष्ठा अर्पण करके हमने भारतीय नदियों के अपने स्मरण को और उनके उपस्थान को सप्त सरिता नाम दिया। भारत एक ऐसा देश है, जहां विश्वास की पराकाष्ठा ने पत्थर को भगवान के रूप में मान लिया। जहां नदियों को माता कहकर पुकारा जाता है भारत की इन नदियों का धार्मिक महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि इनकी चर्चा वेद और पुराणों में होने के साथ-साथ ये भारत के कई त्योहारों का आधार भी हैं। जैसे कुंभ स्नान, पूर्णिमा स्नान, मकर संक्रांति, गंगा दशहरा, छठ पूजा आदि त्योहार नदियों के किनारे मनाने का यही भाव था कि इस अवसर पर स्नान के साथ-साथ दान व संस्कृति का संरक्षण हो।

ऋषिकेश में गंगा नदी में राफ्टिंग करते हुए पर्यटक

नदियों का पौराणिक महत्व

भारत की प्रमुख नदियों की उत्पत्ति से जुड़ी पौराणिक कहानियां अनेक हैं। उदाहरण के लिए स्वर्ग से धरती पर गंगा के अवतरण की किवदंती व्यापक रूप से पूजनीय है। महाकाव्य काल में उल्लेख मिलता है कि राजा सगर के यज्ञ का अश्व समुद्र के किनारे कहीं खो गया था उसे ढूंढने के लिए राजा सगर के 60,000 पुत्रों ने समुद्र के एक भाग को खोद डाला और अंत में उन्हें वह कपिल मुनि के आश्रम में खड़ा दिखाई दिया। उन्होंने समझा कि कपिल मुनि ने इसे यहां पर बांधा है। उन्होंने कपिल मुनि का अनादर किया। कपिल मुनि का अनादर करने पर मुनि के नेत्रों की क्रोध की अग्नि में सब भस्म हो गए। तत्पश्चात राजा सगर के पौत्र अंशुमान ने कपिल मुनि से क्षमा याचना की और उन्हें प्रसन्न करके वह यज्ञ का अश्व ले गये तब राजा सगर ने यज्ञ पूर्ण किया। राजा सगर के वंशज राजा भगीरथ ने पूर्वजों के उद्धार के लिए अपने कठोर तप से देव नदी गंगा को पृथ्वी पर अवतरित किया।

प्राचीन समय से हमारे ऋषि मुनि नदियों के किनारे ही अपनी कुटिया बनाकर रहते थे तथा अपने शिष्यों को ज्ञान देते थे। नदियों का धार्मिक महत्व होने के कारण ही वह शिक्षा का प्रचार-प्रसार वहीं से करते थे। भगवान राम ने भी वनवास के समय अपनी पत्नी माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ पंचवटी में कुटिया बनाकर मंदाकिनी नदी के किनारे अपना समय व्यतीत किया। धार्मिक मान्यता यह है कि पवित्र नदियों में स्नान करने से सभी तरह के पापों से छुटकारा मिलता है। अभी हाल ही में वर्ष 2025 में प्रयाग में संगम तट पर महाकुंभ का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 65 करोड़ लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई। यह आस्था और धार्मिक विश्वास का विषय है जिसमें लोग देश-विदेश से भी महाकुंभ में स्नान करने पहुंचे और अपनी आस्था का परिचय दिया।

गंगा विलास क्रूज द्वारा विश्व की सबसे लम्बी यात्रा

नदियों का सांस्कृतिक महत्व

नदियों का सांस्कृतिक महत्व उनके व्यवहारिक महत्व से कहीं अधिक है। नदियों ने कलात्मक अभिव्यक्ति, लोक कथाओं और कहानियों को प्रेरित किया है। यह कविता, पेंटिंग और संगीत का विषय रही हैं। नदियां कल्पना को साकार करती हैं और किसी विशेष स्थान की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती हैं। नदियां, ताल, सरोवर, कुआं, बावड़ी झील इत्यादि जल के स्रोत हैं। ये सभी जलस्रोत किसी न किसी प्रकार से जीवन से गहरे जुड़े हैं। सभी की हमें आवश्यकता है, इनके बिना जीवन की एक पल भी कल्पना करना असंभव है। हमारी संस्कृति में नदियों को विशेष दर्जा दिया गया है। नदियों की सांस्कृतिक समृद्धि से तात्पर्य है कि नदियां अपने साथ एक जीवंत समाज को लेकर चलती हैं। नदियों की भूमिका सदैव से भारतीय संस्कृति में सम्मान, आस्था व जल के पवित्र स्त्रोत के रूप में रही है। नदियों के सांस्कृतिक महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता क्योंकि समाज को निवास देना, आजीविका देना, परिवहन जीविका प्रदान करना तथा धार्मिक अनुष्ठान और समारोह के लिए विशेष भूमिका के रूप में अनेक संस्कृतियों का समागम नदियों के किनारे होता है। नदियों के किनारे हमारे देश की बसी हुई बस्तियां इस बात की द्योतक हैं कि नदियों का उनके जीवन के साथ गहरा जुड़ाव है। नदियों के किनारे रहने वाले निवासी स्वयं की अनेक घरेलू आवश्यकताओं के लिए उन पर निर्भर हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में नदियों को माता कहा गया है जो कि पूरे समाज का सभी तरह से पालन पोषण करती हैं। उन्होंने न केवल आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए हैं बल्कि शक्ति,

प्रेरणा, प्रकृति के इससे जुड़ाव के रूप में कार्य किया है। नदियां किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करतीं। इनका सदैव देने का भाव होता है अतः इन्हें सदानीरा भी कहा गया है। नदियों के साथ समाज व राष्ट्र गौरवान्वित होता है। नदियां स्वयं के सांस्कृतिक स्वरूप से सभी का सिंचन करती हैं। इनके बिना समाज की कल्पना भी संभव नहीं है। नदियों के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं जिनके साथ नदियां अपनी यात्रा को अविरल पूर्ण करती हैं। संस्कृतिकर्मी नदियों के किनारे मिलते हैं एवं उनके मिलन से संस्कृति नवीन स्वरूप धारण करती है। उदाहरणस्वरूप वर्ष 643 ईस्वी में राजा हर्षवर्धन के द्वारा कन्नौज में गंगा नदी के तट पर एक विशाल धार्मिक सभा का आयोजन किया गया इसे 'महा मोक्ष परिषद' के नाम से जाना जाता है। हर्षवर्धन के द्वारा इसका आयोजन प्रत्येक 5 साल में किया जाता था। इसका उद्देश्य राजकोष के संग्रहित धन को जरूरतमंद प्रजा में बांटना था।

नदियों से पर्यटन और मनोरंजन

नदियां हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करती हैं और कई तरह की मनोरंजक गतिविधियां और प्राकृतिक सुंदरता प्रदान करती हैं। नदी आधारित पर्यटन दुनिया भर में स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। नदी के किनारे स्थित रिसोर्ट, होटल और रेस्टोरेंट यहां आने वाले पर्यटकों से लाभान्वित होते हैं जिससे राजस्व बढ़ता है और आतिथ्य उद्योग में रोजगार के अवसर देता है। इसके अलावा नदियां मत्स्य पालन, नौका विहार और तैराकी जैसी विभिन्न गतिविधियों के अवसर प्रदान करती हैं। यह गतिविधियां न केवल पर्यटकों को आकर्षित करती हैं बल्कि स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करती हैं और आउटडोर मनोरंजन उद्योग के विकास में योगदान देती हैं। नदियां साहसिक पर्यटन के लिए भी उपयोगी हैं। अनेक स्थान पर नदियों के किनारे इस पर्यटन को विकसित किया गया है। इसके द्वारा वहां की आबादी को रोजगार मिलता है। ऋषिकेश में गंगा के किनारे मरीन ड्राइव से मुनि की रेती तक गंगा नदी में राफ्टिंग कराई जाती है। नदियों के तट पर जो वनस्पति विकसित होती है उनके कारण नदियों के आसपास का पारिस्थितिक तंत्र संतुलित रहता है। भारत सरकार द्वारा 13 जनवरी 2023 को दुनिया की सबसे बड़े नदी क्रूज का शुभारंभ किया गया जो वाराणसी से असम के डिब्रूगढ़ तक बांग्लादेश के माध्यम से यात्रा करेगा। यह एकल नदी जहाज द्वारा सबसे बड़ी एकल नदी यात्रा है इसे 'गंगा विलास क्रूज नाम दिया गया। यह क्रूज 50 दिनों में गंगा, भागीरथी, हुगली ब्रह्मपुत्र और वेस्ट कॉस्ट नहर सहित 27 नदी प्रणालियों के साथ 4000 किलोमीटर की दूरी तय करेगा।

नमामि गंगे परियोजना-गंगा की स्वच्छता का एक प्रयास

नदियों में प्रदूषण से बचाव

नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए हमें उसमें कूड़ा-कचरा नहीं फेंकना चाहिए। जल को प्रदूषित होने से रोकें और नदियों के किनारे पेड़ लगाएं। इसके अतिरिक्त जल-संरक्षण को बढ़ावा देना चाहिए और जल के सतत उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रदूषण कम करने के लिए औद्योगिक, कृषि और घरेलू कचरे को नदियों में जाने से रोका जाना चाहिए। लोगों को सख्ती से कानून पालन करवाने चाहिए, नहीं तो उन पर भारी जुर्माना लगाना चाहिए, जिससे नदियों का अस्तित्व खतरे में न पड़े। नदियां अपना स्थान छोड़कर सिकुड़ कर रह गई हैं। जो जल कभी अमृत होता था वह विष बन गया है। लोगों की लापरवाही और निजी लाभ के कारण नदियां अपना अस्तित्व खोती जा रही हैं। जो भविष्य में हमारे लिए ही नुकसानदेह होगा। आने वाली पीढ़ियां जल के लिए तरसेंगी। नदियों को बचाने के लिए नदियों के किनारे सघन वृक्षारोपण करना चाहिए। नदियों में पशुओं को जाने से रोकना चाहिए। गांव व शहरों की नालियों का जल नदियों में न मिलने दें। नदियों में प्लास्टिक और जैविक तौर से नष्ट न होने वाले पदार्थ का इस्तेमाल न करें। गंगा-यमुना भारत की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक हैं। शहरीकरण के कारण भी नदियां प्रदूषित हो रही हैं। लोगों को जल संरक्षण के नियमों का पालन करना चाहिए। जल संचय, जल संरक्षण, जल सफाई पर ध्यान देना चाहिए। नदी परिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक हितों को संतुलित करना महत्वपूर्ण है। स्वस्थ और श्रेष्ठ रूप से संरक्षित नदियां जैव विविधता को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। नदी परिस्थितिकी तंत्र की रक्षा और उसे बहाल करने के लिए विश्व भर में प्रयास किये जा रहे हैं। नदियों के विकसित स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए प्रदूषण को कम करने और जल निकासी का प्रबंध करने जैसे सतत प्रबंधन प्रयासों को लागू किया जा रहा है। यह संरक्षण उपाय न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि नदियों पर निर्भर आर्थिक गतिविधियों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि नदियां आर्थिक शक्ति हैं जो कृषि, व्यापार, ऊर्जा, उत्पादन, पर्यटन और मनोरंजन को बढ़ावा देती हैं। हमें नदियों के संरक्षण और उनकी सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए। नदियों में कचरा न डालें, गंदगी न करें और लोगों को इसके प्रति जागरूक करें। एक पौधा अवश्य लगाएं क्योंकि पौधों की जड़ प्रणाली आसपास की मिट्टी से जुड़ी रहती है और स्थिरता पैदा करती है। जिससे वह नदियों में गंदगी की मात्रा को कम करती है। पेड़ों की जड़ें सभी वनस्पतियों में सबसे चौड़ी और गहरी होती हैं जो ग्रीन हाउस उत्सर्जन को कम करने में मदद करती हैं।

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं कि भारत की प्रमुख नदियां देश की सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक समृद्धि और पारिस्थितिक विविधता का सार प्रस्तुत करती हैं। अपने विशेष महत्व के बावजूद यह नदियां बढ़ते प्रदूषण, अत्यधिक निष्कर्षण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बढ़ते दबाव में हैं। व्यापक प्रदूषण नियंत्रण उपायों, स्थायी जल प्रबंधन प्रयासों और समुदाय संचालित संरक्षण प्रयासों के माध्यम से इन खतरों को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है। नदियों का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है इनके बिना हमारा जीवन संभव नहीं है।

धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व पर्यटन सभी दृष्टिकोणों से नदियां हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। नदियों के प्रति यदि हम माता का भाव रखें, उन्हें माता का सम्मान दें, तभी निश्चित तौर से उनकी दशा सुधरेगी। हमें तय करना है कि आगे आने वाली पीढ़ी को हम नाला देना चाहते हैं या पवित्र, स्वच्छ, सदानीरा, जीवनदायिनी नदियां, हमें क्या करना है? यह हमें तय करना है। सही कहा गया है- 'जल ही जीवन, है। रहीम दास जी ने भी कहा है-

रहिमन पानी राखिए।
बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे।
मोती मानुष चून।

संपर्क करें:
सुनीता अग्रवाल
के.जी.-13, न्यू कविनगर,
गाजियाबाद (उ.प्र.)
मो.:9818766745